रेमॉन्ट - "समाज-विहीन व्यक्ति कोरी कल्पना है।"

शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य (Social Aim of Education)

सामाजिक उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Social Aim) :-

शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को "शिक्षा का सामाजिक और नागरिकता का उद्देश्य" (Social and Citizenship Aim of Education) कहा जाता है। इस उद्देश्य के अनुसार - समाज या राज्य का स्थान व्यक्ति से बहुत ऊँचा है। समाज के हित में ही व्यक्ति का हित है। समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है। समाज में रहकर ही वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है, अपना विकास कर सकता है और उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे सामाजिक नागरिक बनाना है, जो समाज के लिए हितकर कार्य करे तथा जिनमें प्रेम, सहयोग, सहकारिता आदि गुणों का विकास हो। शिक्षा शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण समाज की तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

प्रो० बैगले और डॉ० डीवी के अनुसार शिक्षा में सामाजिक उद्देश्य का अर्थ है - सामाजिक कुशलता की प्राप्ति। अतः शिक्षा का उद्देश्य - प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक रूप से कुशल बनाना है। ऐसा व्यक्ति, अन्य नागरिकों और राज्य की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को सम्मान देता है।

Scanned with CamScanner

शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य से समाजवाद का जन्म हुआ। साधारणतया समाज के दो रूप माने जाते हैं— 1) राष्ट्र-समाजवाद तथा 2) जनतन्त्रात्मक समाजवाद। समाजवाद के इन दोनों रूपों पर प्रकाश डालते हुए सामाजिक उद्देश्य के संकुचित तथा व्यापक अर्थों पर निम्न हैं—

सामाजिक उद्देश्य

संकुचित अर्थ (Narrow Meaning)
↓
राष्ट्र समाजवाद (State-Socialism)
↓
नागरिकता (Citizenship)

व्यापक अर्थ (Wider Meaning)
↓
जनतन्त्रात्मक समाजवाद (Democratic Socialism)
↓
सामाजिक कुशलता (Social Efficiency)

1. आर्थिक कुशलता (Economic Efficiency)
2. निषेधात्मक नैतिकता (Negative Morality)
3. विधायक कुशलता (Positive Morality)

Scanned with CamScanner

सामाजिक उद्देश्य के रूप (Forms of Social Aims) :-

शिक्षा में सामाजिक उद्देश्य के तीन रूप मिलते हैं-

i) सामान्य रूप

ii) उग्र रूप

iii) उदार रूप

i) सामाजिक उद्देश्य के सामान्य रूप (Simple Form of Social Aims) :- इस उद्देश्य के समर्थकों का विश्वास है कि इसके द्वारा सामाजिक और सहयोग उत्पन्न होते हैं, जो जीवन में सुख-सुविधाओं को भोगने के लिए बहुत आवश्यक है। वे यह नहीं मानते हैं कि व्यक्ति समाज से दूर किसी निर्जन स्थान में रहकर अपने जीवन का निर्वाह और विकास कर सकता है। रैमांट के अनुसार - "समाज विहीन" जो विद्वान व्यक्ति को समाज के ऊपर स्थान देते हैं, उसको स्मरण रखना चाहिए कि समाज-विहीन व्यक्ति कोरी कल्पना है। (An isolated individual is a figment of imagination)। अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत चरित्रवान के साथ-साथ बालक को सच्चा सामाजिक प्राणी तथा नागरिक बनाना है। वह समाज की आवश्यकताओं के अनुसार अपने में परिवर्तन करेगा।

Scanned with CamScanner

(Extreme form of Social Aims)

ii) सामाजिक उद्देश्य का उग्र रूप :- उग्र रूप के समर्थक राष्ट्र को व्यक्ति से अधिक श्रेष्ठ मानते हैं। वे व्यक्ति से संबंधित सभी बातों पर राज्य का उचित अधिकार समझते हैं। शिक्षा भी इन्हीं में से एक है। राष्ट्र अपनी आवश्यकता के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करता है। इन उद्देश्यों के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार की शिक्षा-व्यवस्था में व्यक्ति के वैयक्तिक विकास पर ध्यान न देकर उसको राष्ट्रभक्त एवं आज्ञापालक बनाने पर बल दिया जाता है।

उदा०- इस विचारधारा का व्यावहारिक रूप प्राचीन स्पार्टा (Sparta) में मिलता है, यहाँ की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रभक्त, आज्ञापालक एवं अनुशासित सैनिक तैयार करना था। शिक्षा के इस उद्देश्य का समर्थन फिक्टे तथा हीगल ने भी किया था। हिटलर के समय में नाजी जर्मनी (आधुनिक) में लोगों को यह शिक्षा दी जाती थी कि राज्य ही सर्वोच्च सत्ता है और उसको बनाए रखने के लिए जीवन का बलिदान करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

iii) सामाजिक उद्देश्य के उदार रूप (Liberal form of Social Aim)

उदार रूप से शिक्षा का सामाजिक रूप इंग्लैंड और अमेरिका जैसे प्रजातन्त्रीय देशों में दिखाई देता है। यहाँ शिक्षा समाज सेवा (Education for Social Service) और शिक्षा, नागरिकता के लिए (Education for Citizenship) मानी जाती है।

यह शिक्षा सामाजिक हित का विचार करती है और इस बात पर बल देती है कि स्कूलों में विभिन्न विषयों और सामाजिक कार्यों के द्वारा छात्रों को नागरिकता की शिक्षा दी जाय। लिस्टर स्मिथ (Lister Smith) का कथन है - "स्कूल को व्यापक कार्य करना चाहिए। उसे निश्चित रूप से सामाजिक दायित्व और समाज के प्रति भक्ति का निर्माण और विकास का कार्य करना चाहिए।" लोकतांत्रिक देशों का विकास वहाँ के सुयोग्य नागरिकों पर ही निर्भर करता है। सुयोग्य नागरिक से तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है, जो अधिकार एवं कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करता हो। इस प्रकार के नागरिक स्वयं का विकास एवं समाज की सेवा करते हुए राष्ट्र के विकास में सदैव संलग्न रहते हैं।

Scanned with CamScanner